क्रिकेट के दुश्मनों की गंदी राजनीति

वर्षों से भारतीय लोगों ने गंदी राजनीति जैसे वोट के लिए पैसा, बूथ कैप्चरिंग, अवैध मतदान देखते आ रहे है. लेकिन कभी किसी ने वो नहीँ देखा होगा जो अभी रिपब्लिक राजस्थान में चल रहा है.

मेरा मतलब है कि कोई भी आदमी निम्न तथ्यों की व्याख्या कैसे करेगा:

ए) 7 मार्च को एक अपील अमीन पठान के टाइमलाइन पर पोस्ट किया गया था जहाँ लोगों से 9 मार्च को सुबह 09 बजे एसएमएस स्टेडियम स्थित आरसीए दफ्तर तक पहुंचने के लिए आह्वान किया गया था. अमीन चुनाव लड़ रहे थे.

मतदान के दिन हिंसा की आशंका के बारे में इस तथ्य को समय पर अध्यक्ष, आरएसएससी और पुलिस आयुक्त, जयपुर, दोनों को दे दी गई थी.

बी) तब, कल नो कांफिडेंस मोशन का विरोध करने वाले मेरे समर्थकों के समूह को ले जाने के लिए एक बस जब सुबह 10:50 पर जयपुर के राम बाग और अम्बेडकर सर्कल पर पहुंची तब उनके वाहनों पर हथियारों, लोहे की छड, तलवारे आदि के साथ गुंडों की भीड़ ने हमला किया.

सी) वाहन को रोक कर गुंडे जबरदस्ती बसों में घुस गए और बस में बैठे लोगों से मार–पीट शुरू कर दी. 15 से अधिक लोग इस हमले में घायल हो गए और जयपुर के अस्पतालों में भर्ती कराया गया. भीड़ ने वाहनों पर भारी पथराव किया जिससे आरसीए के कई सदस्य घायल हुए.

डी) इस पूर्वनियोजित हमले का उद्देश्य नो कांफिडेंस मोशन का विरोध करने वाले सदस्यों को धमकाना और बैठक में भाग लेने से रोकना था.

ई) फिर, हमले और व्यक्तिगत चोट के बावजूद जब आरसीए के सदस्य सुबह 11 बज कर 5 मिनट से 11 बज कर 15 मिनट के आसपास बैठक स्थल पर पहुंचे, तो उन्हें आरएसएससी के कर्म्चारियों और पुलिसकर्मियों ने यह कहते हुए अन्दर जाने से मना कर दिया कि वे देरी से आए है और बैठक पहले से ही शुरू हो चुकी है.

एफ) जबकि बैठक का समय आरएसएससी द्वारा सुबह 11:00 बजे से दोपहर 2:00 बजे के बीच तय किया गया था.

जी) मौजूदा स्थिति से अवगत कराने के लिए इस बीच कई ईमेल्स और टेक्स्ट मैसेज आरएसएससी अध्यक्ष को भेजे गए. इस सब के बाद भी आरएसएससी अध्यक्ष ने पूरी प्रक्रिया को सिर्फ नो कांफिडेंस मोशन लाने वाले (समर्थकों) सदस्यों के साथ, बिना इसका विरोध करने वालो की मौजूदगी के, ही आगे बढाने का फैसला लिया. यह इसलिए हुआ ताकि कोई इसका विरोध न कर सके. खासकर, चूंकि वैसे सभी सदस्यों जो इस मोशन का विरोध करना चाह्ते थे, उन्हें बैठक में शामिल होने और मतदान से रोक दिया गया.

यह सब कुछ स्थानीय जयपुर पुलिस के पूर्ण अधिकार क्षेत्र में दिन के उजाले में हुआ जिसने कुछ नही किया. इससे कई सवाल खडे होते है.

क्या मुख्यमंत्री भी इस सब मे शामिल थी?
जो कुछ भी राज्य में कानून और व्यवस्था के साथ हुआ, वह बनाना रिपब्लिक की तरह है जिसमँ राजस्थान भी इस महान गणतंत्र के कुछेक राज्यो के साथ शामिल हो गया है.

गुंडों और खेल विरोधी तत्व जो घृणित काम किया उससे देश में खेल का अच्छा नाम खराब हुआ. जयपुर जेल ब्रेक, पिंक सिटी में घटी इस घट्ना को में इसी नाम से बुलाना पसन्द करता हूँ, से मुझे काफी दुख हुआ है.

बदमाशों के झुंड हम से खेल पर नियंत्रण को हथियाने के लिए ये सब कर रहे थे. हमलोगों ने पहले कार्यकाल में ख्ले को शासन के मुख्य एजेंडे पर वापस लाने का काम किया था. लेकिन अफसोस की बात है कि खेल हमारे प्रतिद्वंद्वियों के शीर्ष एजेंडे में कभी रहा ही नही.

वे सिर्फ खेल की कीमत पर सत्ता चाहते थे. यह दुखद है कि इस देश में खेल को चलाने का मंत्र मसल पावर यानी ताकत बन गया है. यह दुखद है. एक जेंटमैन गेम के साथ ऐसा व्यवहार कैसे किया जा सकता है? क्यों नही हमें वोट देने वाले लोगों की इच्छा का सम्मान किया जा सकता है?

हमने एसोसिएशन के इस कृत्य से लग हो कर धैर्य से इंतजार करने का फैसला किया है. हर सही सोच और लोकतंत्र को प्यार करने वाला व्यक्ति यही काम करेगा. हमने जो कुछ देखा है वो सिर्फ सत्ता के लिए नग्न लालच का प्रदर्शन था. यह नियंत्रण और किसी तरह सत्ता हासिल करने के अलावा और कुछ नही था.

आधे से अधिक प्रतिनिधियों पर जब हमला किया जा रहा था, तह आखिर कैसे बैठक आगे जारी रह सकता था. यह निश्चित रूप से मेरी समझ से परे है. असली क्रिकेट प्रेमियों पर आपराधिक हमला किया जा रहा था. यह लोकतंत्र के सिद्धांतों का जबरदस्त मजाक है. यह हमला असल क्रिकेट समर्थकों के लिए दुखद था.

मैं यह कहने के लिए माफी चाहता हूँ, लेकिन सोमवार को जयपुर में जो कुछ देखा गया वह हत्या से कम नहीं था. लोकतंत्र की हत्या. मुझे लगता है में राजस्थान के क्रिकेट में एक आपराधिक गिरोह द्वारा किए गए हमले को सहने के लिए क्रिकेट के सभी बहादुर सैनिकों को सलाम करता हूँ.

बैठक को हेड कर रहे जे.सी. मोहंती, जो संयोग से राज्य सरकार में भी एक पद धारण करते है, को इस हिंसा के लिए पठान समूह के खिलाफ आरोप लगाने चाहिए थे. इसके बजाय वे पठान की लाइन पर ही चल रहे थे. खेल की छवि को इसी से चोट लगी है. पठान गिरोह को राज्य सरकार के समर्थन से एक फिक्स्ड मैच की बू आती है.

बैठक की अध्यक्षता कर रहे व्यक्ति को हमारे समूह की अनुपस्थिति के कारण एहसास होना चाहिए था. उन्हें ये समझना चाहिए था कि कुछ गलत हो रहा है. इसके बजाय, चेयर हेड पठान समूह के साथ चले गए. ऐसा लगता है कि बैठक में उपस्थित सभी संबंधित लोगों का एक गुप्त एजेंडा था.

जज, जूरी और अपराधी सभी एक तरफ थे. कोई आश्चर्य नहीं कि न्याय क्यों नही दिया गया.

अगर आने वाले सप्ताह, महीने और वर्षों में ऐसा ही होता रहा तो हमारे खेल के लिए कोई उम्मीद नहीं बचेगी.
एक भव्य राज्य राजस्थान में खेल को मृत घोषित किया जा सकता है लेकिन फिर भी में कहूंगा कि लांग लिव गेम.

लेकिन में हार नहीं मानूंगा. जयपुर में आरसीए कार्यालय उच्च न्यायालय के आदेश पर सील कर दिया गया है. मैने इस नो कांफिडेंस असाधारण आम बैठक के खिलाफ अपील की है. अगले सप्ताह 30 मार्च को अदालत की सुनवाई का इंतजार है.